राजस्थान की चित्रकला भारतीय कला की समृद्ध धरोहर का अभिन्न हिस्सा है, जो न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन को दर्शाती है, बल्कि राजस्थान की ऐतिहासिक और सामाजिक परंपराओं का भी प्रतिबिंब है। इसकी शुरुआत 16वीं शताब्दी में हुई, जब राजपूत शासकों ने कला और संस्कृति को बढ़ावा दिया।

राजस्थान की प्रमुख चित्रकला शैलियाँ

1. मेवाड़ शैली (Mewar School)

मेवाड़ शैली को राजस्थानी चित्रकला की जननी माना जाता है। इसकी शुरुआत 13वीं शताब्दी में हुई, जब तेज सिंह के शासनकाल में 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णि' जैसी धार्मिक पुस्तकों के चित्रण की परंपरा शुरू हुई। इस शैली में प्रमुख रूप से 'धोला मारू', 'पारिजात अवतार' और 'भगवत पुराण' जैसे धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों को चित्रित किया गया। महाराणा कुम्भा के शासनकाल में इस शैली ने अपने उत्कर्ष को प्राप्त किया।

2. मारवाड़ शैली (Marwar School)

मारवाड़ शैली में जोधपुर, बीकानेर, किशनगढ़, अजमेर, नागौर, जैसलमेर आदि क्षेत्रों की चित्रकला शामिल है। इस शैली में मुग़ल प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जाता है, विशेषकर 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में। चित्रों में शाही दरबार, युद्ध दृश्य और शिकार के दृश्य प्रमुख होते हैं। 19वीं शताब्दी में इस शैली ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई, जिसमें रंगों की प्रचुरता और आकर्षकता देखी जाती है।

3. हाड़ौती शैली (Hadoti School)

हाड़ौती शैली कोटा, बूंदी और झालावाड़ क्षेत्रों की चित्रकला को दर्शाती है। इस शैली में हल्के रंगों का प्रयोग और सौम्य प्रकृति चित्रण प्रमुख हैं। चित्रों में धार्मिक कथाएँ, शाही दरबार और प्राकृतिक दृश्य प्रमुख होते हैं।

4. ढूंढाड़ शैली (Dhundar School)

ढूंढाड़ शैली में आमेर, जयपुर, अलवर, शेखावाटी आदि क्षेत्रों की चित्रकला शामिल है। इस शैली में मुग़ल और स्थानीय शैली का सम्मिलन होता है। चित्रों में राजसी जीवन, उत्सव, शिकार और युद्ध के दृश्य प्रमुख होते हैं।

चित्रकला की तकनीक और सामग्री

राजस्थानी चित्रकला में प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया जाता है, जो खनिजों, पौधों और कीमती रत्नों से प्राप्त होते हैं। चित्रों को हस्तनिर्मित कागज या कपड़े पर उकेरा जाता है। चित्रकारों द्वारा उपयोग किए जाने वाले ब्रश ऊंट और गिलहरी के बालों से बनाए जाते हैं, जो चित्रों की सूक्ष्मता और स्पष्टता को बढ़ाते हैं। 'वसली' नामक तकनीक का उपयोग चित्रों की मोटाई बढ़ाने के लिए किया जाता है, जिसमें पतले कागज की परतों को चिपकाकर मोटाई बढ़ाई जाती है।

प्रमुख चित्रकला विषय

राजस्थानी चित्रकला में निम्नलिखित प्रमुख विषयों को चित्रित किया जाता है:

- धार्मिक कथाएँ: 'धोला मारू', 'पारिजात अवतार', 'भगवत पुराण' जैसी धार्मिक कथाएँ प्रमुख विषय हैं।
- कृष्ण लीला: 'गीत गोविंद' और 'पिचवाई' चित्रकला में कृष्ण और राधा की लीलाओं का चित्रण होता है।
- शाही दरबार और उत्सव: राजसी जीवन, दरबार और उत्सवों के दृश्य चित्रित किए जाते हैं।
- प्राकृतिक दृश्य: प्रकृति, पक्षी, फूल-पत्तियाँ आदि के दृश्य भी चित्रित होते हैं।

प्रसिद्ध चित्रकार और उनके योगदान

- निहाल चंद: किशनगढ़ शैली के प्रमुख चित्रकार, जिन्होंने 'बानी ठानी' जैसे प्रसिद्ध चित्र बनाए।
- साहिबदीन: मेवाड़ शैली के प्रमुख चित्रकार, जिन्होंने धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों पर चित्रण किया।
- मुरारी लाल: मारवाड़ शैली के प्रमुख चित्रकार, जिन्होंने शाही दरबार और युद्ध दृश्यों का चित्रण किया।

राजस्थानी चित्रकला का संरक्षण और वर्तमान स्थिति

समय के साथ, राजस्थानी चित्रकला में कई परिवर्तन आए हैं। वर्तमान में, इस कला को संरक्षित करने के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। राजस्थान सरकार और विभिन्न संस्थाएँ चित्रकला कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रदर्शनी आयोजित कर रही हैं। इसके अलावा, डिजिटल माध्यमों का उपयोग करके इस कला को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

राजस्थान चित्रकला: समय-काल एवं विकास

काल / समय	**मुख्य बातें / परिवर्तक गुंजाइश**	**प्रमुख शैलियाँ / केंद्र**	**प्रमुख कलाकार एवं उदाहरण चित्र**
प्रारंभिक / मध्यकाल पूर्व 16वीं शताब्दी	राजस्थान में जैन चित्रकला एवं गिरिजाओं का प्रभाव; हस्तलिपि (manuscript) चित्रण; धार्मिक विषयों पर प्राथमिक काम।	जैन स्कूल (Western Indian / Gujarat-Rajasthan सीमा), हस्तलिपि चित्रण	—
लगभग 16वीं शताब्दी (1500-1600)	मुगल साम्राज्य का उदय; मुगल कला का प्रभाव; राजपूत दरबारों में चित्रकला को आधिकारिक समर्थन। पहले उभरते शिविरों में अम्बेर (Amber / धुंधार-Jaipur), मेवाड़ आदि शामिल।	*Mewar School* — “Ragamala” श्रृंखला; Amber / Dhundhar School प्रारंभ।	सबसे प्रसिद्ध प्रारंभिक उदाहरण: 1605 ई. में चावंड में “Ragamala” श्रृंखला (Misardi द्वारा) – Mewar School में।
17वीं सदी	चित्रकला शैलियों में अधिक विविधता; धार्मिक, भक्ति, शास्त्रीय विषयों के साथ शिकार, दरबार, त्योहार, नायिका-नायक भावनाएँ आदि। मुगल शैली के प्रभाव से चित्रों की आकृतियाँ, परिदृश्य विकास। दरबारों का संरक्षण बढ़ा।	Bundi, Kota, Bikaner, Kishangarh, Marwar (Jodhpur) आदि शैलियाँ गोलाकार हो गईं; मारवाड़ तथा अन्य दरबारों में विशेष शैली विकसीत हुई।	प्रमुख कलाकार: **Sahibdin** (Mewar)--भक्ति-आधारित चित्र; “Rasamala”, “Bhagwat Purana” के चित्र; **Nihal Chand** (Kishangarh)- “Bani Thani”, कृष्ण-राधा चित्र आदि।
18वीं सदी	शैलियों का पूर्ण विकास; रंग-रूप और विषयों में विशिष्ट पहचान; मुगल प्रभाव कम-अधिक शिथिल; कुछ शैलियों में स्थानीय आकृति-शैली (folk influence) बढ़ी; अधिक पोर्ट्रेट, महाकाव्य, बृहत् श्रृंखलाएँ।	**Jaipur School** की वृद्धि; **Kota School** का उत्कर्ष; **Bundi School** और **Kishangarh** की विशेष पहचान।	उदाहरण: Kishangarh का “Radha and Krishna” चित्र (mid-1700s), Bikaner शैलियों में पोर्ट्रेट और महाकाव्य विषय; Kota में शिकार और रंग-शोभा से भरपूर दरबार दृश्य।
19वीं सदी से आधुनिक अवधि (19वीं-20वीं शताब्दी)	राजनीतिक बदलाव, विदेशी कलाएँ, फोटोग्राफी का प्रभाव; राजपूत शाही प्राधिकरणों का थोड़ा घटता आया; कला संस्थाओं की शुरुआत; लोक एवं फोक-कलाएँ पुनरुत्थान; Phad, Pichwai आदि की लोकप्रियता; नए	लोक-चित्रकला, फड़ पेंटिंग; आधुनिक चित्रकारों की सक्रिय भूमिका; कला विद्यालय (Schools of Art)	विशिष्ट कलाकार: **B. G. Sharma** (उदयपुर, नाथद्वारा-श्रीनाथजी संस्कार) जिन्होंने पारंपरिक भावना को पुनर्जीवित किया; **Ram Gopal Vijayvargiya** (Jaipur) जो आधुनिक और पारंपरिक का मिश्रण करते हैं। **Shree Lal Joshi**

काल / समय	मुख्य बातें / परिवर्तक गुंजाइश	प्रमुख शैलियाँ / केंद्र	प्रमुख कलाकार एवं उदाहरण चित्र
	कलाकारों द्वारा पारम्परिक शैली को नया रूप देना।		— फड़ पेंटिंग के क्षेत्र में प्रसिद्ध लोक कलाकार।
समकालीन समय (20वीं शताब्दी उत्तरार्ध-21वीं शताब्दी)	पर्यटन, कला-मेले, गैलरीज़, अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों से स्थानीय कलाएँ सुर्ख़ियों में; कलाकार पारंपरिक शैलियों के आधार पर नए प्रयोग कर रहे हैं; संरक्षण और पुनरुत्थान प्रयास बढ़े हैं।	कई कलाकार जो पारंपरिक मिनिएचर और लोक कला को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर रहे हैं; चित्र और दीवार चित्र आदि में प्रयोग	उदाहरण: Gopal Swami Khetanchi (Jaipur) -- राजस्थान की संस्कृति, ग्रामीण जीवन, राजपूत वास्तुकला आदि पर चित्रण।

कुछ प्रमुख कलाकार और उनके योगदान

- **Sahibdin** (मेवाड़) — मेवाड़ स्कूल को प्रसिद्ध बना दिया; “Rasamala”, “Bhagwat Purana” जैसे धार्मिक तथा भक्ति गीतों की श्रृंखलाएँ।
- **Nihal Chand** (Kishangarh) — ‘Bani Thani’ की प्रसिद्धता; कृष्ण-राधा के रूपांतर; आभासी सौंदर्य और बोल्ड लेकिन सूक्ष्म रंगों का कुशल उपयोग।
- **B. G. Sharma** — पारंपरिक मिनिएचर शैली को पुनर्जीवित करने में; भक्ति-थीम, कृष्ण चित्र आदि; नाथद्वारा केंद्रित कार्य।
- **Shree Lal Joshi** — फड़ चित्रकला (Phad Painting) में लोक-थीम, दीवार चित्र, प्रमुख लोक कथाएँ।
- **Ram Gopal Vijayvargiya** — आधुनिक युग में राजस्थान की लोक-कला और मिनिएचर चित्रों का संगम; साहित्यिक, मिथकीय विषयों को चित्रात्मक रूप देना।

उदाहरण चित्र / कलात्मक नमूने (Representative Examples)

- *“Ragamala” श्रृंखला, Chawand, 1605 ई.* — मेवाड़ स्कूल, Misardi द्वारा।
- *“Radha-Krishna in the Boat of Love” आदि चित्र, Kishangarh, लगभग मध्य-18वीं शताब्दी* / Nihal Chand द्वारा।
- *नाथद्वारा की श्रीनाथजी-थीम चित्रकलाएँ* — भक्ति और मंदिर कला का प्रयोग। (B. G. Sharma सहित अन्य)
- *फड़ चित्रकला (Phad) की यात्रा चरित्र (traveling narrative) शैली* — ग्रामीण लोक कथाएँ, देव नारायण आदि।

तुलनात्मक प्रश्नों के उदाहरण और उत्तर

प्रश्न 1

मेवाड़ शैली और किशनगढ़ शैली की तुलना करो।
(Compare Mewar and Kishangarh styles of Rajasthani miniature painting.)

उत्तर का खाका:

विषय	**मेवाड़ शैली (Mewar Style)**	**किशनगढ़ शैली (Kishangarh Style)**
उत्पत्ति और समय	मेवाड़ शैली का विकास 16-17वीं सदी में हुआ, विशेष रूप से उदयपुर तथा चावंड (Chawand) आदि केन्द्रों में।	किशनगढ़ की स्थापना 1609 ई. में हुई, किशनगढ़ शैली का उत्कर्ष 18वीं सदी में हुआ, विशेषकर राजा सावंत सिंह (Raja Sawant Singh) के दरबार में।
मुख्य विषय एवं थीम	धार्मिक विषय (भगवत पुराण, कृष्ण-लीला, राम-कथा आदि), राज दरबार, शिकार दृश्य, प्राकृतिक दृश्य। मेवाड़ कला में भक्ति और धार्मिक भावना प्रमुख।	मुख्य रूप से राधा-कृष्ण का प्रेम व भक्ति भाव; प्रकृति, झील-नो-झर, रात-चाँदनी के दृश्य; संवेदनशीलता और सौंदर्य का प्रदर्शन।
शैलीगत विशेषताएँ (Style / Visual Features)		

- रंगों की तीव्रता, प्रमुख लाल, पीला, हरा, नीला आदि।
- चेहरे अपेक्षाकृत सघन, नाक बड़ी-थोड़ी सुंदरता और तिरछी आँखें, सजावट, मुट्ठ-वसे पट्टेदार वस्त्र आदि।
- पृष्ठभूमि में दृश्यों (पेड़, पानी, आकाश) का प्रयोग लेकिन अधिक सजावटी, कम वास्तविक फर्क (perspective)।
- आकृतियाँ लम्बी-चौड़ी, गर्दन पतली, माथा चौड़ा, आँखें कमल-पंखुड़ी-आकार की, सौम्य भाव; रात्रि-चाँदनी, झीलें-नदियाँ, पौधे-पेड़, फूल-पत्ते आदि सजावटी पृष्ठभूमि।
  | **प्रभाव / संपर्क** | कुछ मुगल प्रभाव (रंग, पोर्ट्रेट शैली) मिला है, लेकिन मेवाड़ शैली ने अपेक्षाकृत अधिक पारंपरिकतावादी रूप बनाए रखा। किशनगढ़ ने मुगल शैली, पुष्टिमार्गीय भक्ति परंपरा और स्थानीय सौंदर्यबोध का मिश्रण किया; मुगल शैली से कुछ तकनीकी प्रभाव, लेकिन व्यक्तित्व सौम्य और भावनात्मक।
  | **सुंदरता, आभूषण एवं नारी चित्रण** | महिलाएँ सज-धज के साथ, लेकिन आम तौर पर अधिक कठोर पोशाक एवं गहनों का उपयोग; सौंदर्य की अभिव्यक्ति कम अत्यधिक नहीं। महिलाओं की सुंदरता का अत्यधिक प्रदर्शन; महीन वस्त्र, पारदर्शी कपड़े, बारीक़ आभूषण; सौम्य और कोमल अभिव्यक्ति।
  | **प्रमुख कलाकार** | Manohar, Sahibdin, Kriparam आदि।

  Nihal Chand सबसे प्रसिद्ध; “Bani Thani” चित्र; Sawant Singh के समय के कलाकार।

सारांश:

- मेवाड़ शैली ज़्यादा धार्मिक और भक्ति प्रधान है, कला में गति (movement) और भावना के साथ-साथ सजावट पर ज़ोर है।
- किशनगढ़ शैली सौंदर्य, प्रेम-भाव, कोमलता और प्राकृतिक सौंदर्य के चित्रण में विशिष्ट है।

प्रश्न 2

किशनगढ़ शैली को “Bani Thani” के चित्र के संदर्भ में क्यों महत्वपूर्ण माना जाता है?

उत्तर का खाका:

- **Bani Thani** चित्र किशनगढ़ शैली का आइकॉनिक उदाहरण है।
- इस चित्र में चित्रकार **Nihal Chand** ने राधा-कृष्ण प्रेम और सौंदर्य के आदर्शों को चित्रित किया है।
- चित्र की प्रदर्शित विशेषताएँ जैसे लम्बी गर्दन, चूड़ीदार व भव्य गहने, चौड़ी भौं-ओं, पतला नाक, कोमल स्वरूप आदि किशनगढ़ शैली के सौंदर्यता बोध को परिलक्षित करते हैं।

प्रश्न 3

मेवाड़ शैली ने किशनगढ़ शैली पर कैसे प्रभाव डाला / कैसे किशनगढ़ शैली ने मेवाड़ से अलग हुई?

उत्तर का खाका:

- किशनगढ़ शैली ने मेवाड़ की ओर से कला-संस्कृति, धार्मिक विषयों और भक्ति भाव से प्रेरणा ली।
- किंतु किशनगढ़ ने सौंदर्यबोध, नारी के सौंदर्य, प्रेम-भाव, प्राकृतिक दृश्यों जैसे झील-बोट, चाँदनी आदि को ज़्यादा महत्व दिया। मेवाड़ में ये विषय थे लेकिन किशनगढ़ ने इन्हें अधिक विशुद्ध और सजावटी रूप दिया।
- तकनीकी दृष्टि से किशनगढ़ में चित्रों में परिमित, संतुलित रेखाएँ, नाजुक चेहरे, कोमल रंगों का प्रयोग; मेवाड़ में रंगों की तीरवता (boldness), सजावट और भावनाओं की तीव्रता अधिक।

MCQ प्रश्न (उत्तर सहित)

1. राजस्थान की मिनिएचर पेंटिंग शैली किस शताब्दी में अपना उत्कर्ष (flourish) दिखाती है?
   A. 15वीं-16वीं शताब्दी
   B. **16वीं-17वीं शताब्दी**
   C. 18वीं-19वीं शताब्दी
   D. 19वीं-20वीं शताब्दी
   उत्तर: B
2. 'Rajput Paintings' शब्द किसने प्रयोग किया ताकि मुग़ल स्टाइल से अलग राजस्थान-की कला को पहचाना जा सके?
   A. Anand Coomaraswamy
   B. Abanindranath Tagore
   C. Amrita Sher-Gil
   D. Raja Ravi Varma
   उत्तर: A
3. “Waslis” क्या है राजस्थान की मिनिएचर पेंटिंग में?
   A. रंगों में प्रयुक्त गोंद-मिश्रित रंग

B. चित्र बनाने वाले पतले कागज़ की परतें जो चिपका कर मोटाई बढ़ाई जाती है
C. विशेष ब्रश (paint brush)
D. झील-पानी या परिदृश्य पृष्ठभूमि
उत्तर: B

4. राजस्थान की पेंटिंग में प्रयुक्त रंग स्रोतों में निम्न में से किसका योगदान होता है?
A. सिर्फ पौधे (plant-based dyes)
B. खनिज एवं कीमती धातुएँ जैसे सोना-चाँदी व गोंद मिश्रण
C. केवल सिंथेटिक रंग
D. जानवरों से प्राप्त रंग
उत्तर: B

5. "Pichhwai" पेंटिंग शैली मुख्यतः किस स्थान से संबंधित है?
A. बीकानेर
B. जयपुर
C. **नाथद्वारा**
D. किशनगढ़
उत्तर: C

6. राजस्थान की मिनिएचर पेंटिंग की एक प्रमुख थीम क्या है?
A. दैनिक जीवन (Everyday life)
B. **रामायण एवं भगवद् पुराण से कथाएँ / कृष्ण लीला**
C. आधुनिक विषय
D. प्राकृतिक दृश्य (केवल परिदृश्य)
उत्तर: B

7. राजस्थान की पेंटिंग में ब्रश (paint brushes) प्रायः किस जीव-के बालों से बनते थे?
A. ऊँट और गिलहरी के बाल (Camel & squirrel hair)
B. गाय के बाल
C. घोड़े के बाल
D. बकरी के बाल
उत्तर: A

8. "Radha (Bani Thani)" चित्र किस राजस्थान के उप-स्कूल की पहचान है?
A. मेवाड़ (Mewar)
B. बीकानेर (Bikaner)
C. **किशनगढ़ (Kishangarh)**
D. जयपुर (Jaipur)
उत्तर: C

9. किस धार्मिक / भक्ति संप्रदाय ने राजस्थान कला-चित्रकला को विशेष प्रेरणा दी?
A. बौद्ध धर्म
B. जैन धर्म
C. **वैष्णव धर्म (Vaishnavism)**
D. शैव धर्म
उत्तर: C

10. राजस्थान की मिनिएचर पेंटिंग में किस प्रकार के चेहरे भाग (face depiction) अधिक दिखाई देते हैं?
    A. पूरा सामने से (frontal face)
    B. **एक-चश्मा / साइड प्रोफाइल (side profile / ek-chasma face)**
    C. पीछे की ओर से
    D. सिर्फ सिल्हूट (silhouette)
    उत्तर: B

11. बुंदी स्कूल (Bundi School) की पेंटिंग शैली किस विशेषता के लिए प्रसिद्ध है?
    A. अत्यधिक फोटोरियलिस्टिक (Photorealistic) चित्रण
    B. हल्के रंगों का प्रयोग एवं सौम्य प्रकृति चित्रण
    C. भारी शिकार एवं युद्ध दृश्य, हल्की प्रकृति सजावट के साथ
    D. सिर्फ धार्मिक और भक्ति-थीम के चित्रण
    उत्तर: B
    स्पष्टीकरण: बुंदी शैली का रंग प्रयोग जीवंत और नेचुरल प्रकृति, पत्ते-पेड़, पक्षी आदि के चित्रण में हल्कापन और सौंदर्य मिलता है।

12. जयपुर (Jaipur) स्कूल की पेंटिंग में किस प्रकार की विशेषता पायी जाती है जो उसे बुंदी से अलग करती है?
    A. रंगों की सीमित श्रृंखला (न्यून रंगों का प्रयोग)
    B. मुगल एवं स्थानीय शैली का सम्मिलन, पोर्ट्रेट और सजावटी पृष्ठभूमि
    C. सिर्फ प्राकृतिक दृश्यों का चित्रण
    D. झील-नदी और पहाड़ों का बहुत अधिक यथार्थवादी चित्रण
    उत्तर: B
    स्पष्टीकरण: जयपुर शैली में मुगल कला से प्रभावित रेखाएँ, सजावटी वास्तुशिल्प पृष्ठभूमि, उच्च स्तर की सजावट और पोशाकें, राजसी जीवन के दृश्य सामान्य हैं।

13. निम्नलिखित में से कौन-सी वस्तु जयपुर और बुंदी दोनों ही शैलियों में सामान्य है?
    A. पिचवाई (Pichhwai) शैली की प्रचलन
    B. जीवन-दरबार, शिकार, त्योहार आदि के चित्रण
    C. मुगल शैली का बिल्कुल अभाव
    D. बड़े हवेलियों के बाहरी दीवारों पर चित्र न करना
    उत्तर: B
    स्पष्टीकरण: दोनों शैलियों में शाही दरबार, त्योहार, शिकार, प्राकृतिक दृश्य आदि विषय शामिल होते हैं।

14. जयपुर स्कूल की पेंटिंग में "Suratkhana" क्या है?
    A. रंगों का विशेष प्रकार
    B. चित्रकारों का प्रशिक्षण केन्द्र एवं चित्र निर्माण स्टूडियो
    C. देवी-देवताओं की मूर्तियों का समूह
    D. एक प्रकार की तस्वीरों की अलंकरण शैली
    उत्तर: B
    स्पष्टीकरण: जयपुर के rulers ने 'Suratkhana' नामक चित्रकला विभाग / स्टूडियो स्थापित किया जहाँ चित्र बनाए जाते थे और संग्रहित भी।

15. निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषता बुंदी स्कूल को कोटा स्कूल से अलग बनाती है?
A. कोटा स्कूल में शिकार और युद्ध दृश्यों का प्रचुर चित्रण
B. बुंदी शैली का रंग प्रयोग और सजावटी प्राकृतिक पृष्ठभूमि अधिक संतुलित होती है
C. कोटा शैली में दृष्टिकोण (perspective) का उपयोग अधिक है
D. बुंदी शैली में मुगल प्रभाव बिल्कुल नहीं दिखता
उत्तर: B
स्पष्टीकरण: बुंदी शैली में प्राकृतिक पृष्ठभूमि (पेड़-पौधे, पक्षी, जल आदि) बहुत सुंदरता से तथा संतुलित रूप से चित्रित होती है, जबकि कोटा ने बुंदी से प्रेरणा ली है लेकिन उसके विषय-वस्तु और तकनीक में कुछ परिवर्तन होते हैं जैसे युद्ध, शिकार दृश्य, मूर्तिपूर्ण चरित्र आदि।

16. Jaipur स्कूल की पेंटिंगों का उत्कर्ष किस शासक के समय हुआ था?
A. Sawai Jai Singh I
B. Maharana Kumbha
C. Rao Chattar Sal
D. Sawai Pratap Singh
उत्तर: A (Sawai Jai Singh)
स्पष्टीकरण: जयपुर स्कूल का विकास विशेष रूप से Sawai Jai Singh के शासनकाल में हुआ, जब जयपुर को राजधानी बनाया गया और कला-संस्कृति को बढ़ावा मिला।

17. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सी जयपुर शैली से संबंधित है?
I. मुगल और स्थानीय शैली का मिश्रण
II. पत्ते-पेड़ और वास्तुशिल्प पृष्ठभूमियों की सजावट
III. रंगों में अधिकतम स्मोक्ड/गहरे रंगों का प्रयोग
IV. राजसी पोशाक, आभूषण और उत्सवों के दृश्य

A. I, II और IV
B. सिर्फ II और III
C. I और III
D. II, III, IV
उत्तर: A (I, II और IV)
स्पष्टीकरण: जयपुर शैली में मुगल-स्थानीय शैली का सम्मिलन है; सजावटी प्राकृतिक और वास्तुशिल्प पृष्ठभूमियाँ, राजसी पोशाक-आभूषण और दरबार, उत्सव आदि चित्रण प्रमुख हैं; लेकिन “अधिकतम गहरे/स्मोक्ड रंगों” का प्रयोग जयपुर की सबसे बड़ी विशेषता नहीं है।

17. **"Bani Thani" चित्र किस राजस्थान की उप-शैली से संबंधित है?**
A) मेवाड़
B) किशनगढ़
C) बूंदी
D) जयपुर
उत्तर: B) किशनगढ़
स्पष्टीकरण: किशनगढ़ शैली में "Bani Thani" चित्रण प्रसिद्ध है, जिसमें राजस्थानी महिला की सुंदरता और भावनाओं को दर्शाया गया है।

18. **"Maru Ragini" चित्र किस चित्रकार द्वारा बनाया गया था?**

A) निहाल चंद

B) साहिबदीन

C) राजा अनिरुद्ध सिंह होरा

D) मुरारी लाल

उत्तर: C) राजा अनिरुद्ध सिंह होरा

स्पष्टीकरण: "Maru Ragini" चित्र राजा अनिरुद्ध सिंह होरा द्वारा बनाया गया था और यह राजस्थान की चित्रकला का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

19. **"Krishna on Swing" चित्र में कितने मानव रूप दिखाए गए हैं?**

A) 2

B) 3

C) 4

D) 5

उत्तर: C) 4

स्पष्टीकरण: इस चित्र में भगवान श्री कृष्ण, राधा, एक सहेली और एक ग्वाला दिखाए गए हैं।

20. **"Nath Charita" चित्र किस उप-शैली से संबंधित है?**

A) जोधपुर

B) जयपुर

C) किशनगढ़

D) बूंदी

उत्तर: A) जोधपुर

स्पष्टीकरण: "Nath Charita" जोधपुर शैली की एक प्रसिद्ध चित्रकला है, जो नाथ संप्रदाय के जीवन को दर्शाती है।

21. **राजस्थानी चित्रकला में "Wasli" का क्या अर्थ है?**

A) रंगों का मिश्रण

B) चित्रकार का नाम

C) चित्र बनाने का स्थान

D) पतले कागज की परतें जो चिपका कर मोटाई बढ़ाई जाती हैं

उत्तर: D) पतले कागज की परतें जो चिपका कर मोटाई बढ़ाई जाती हैं

स्पष्टीकरण: "Wasli" चित्रकला में उपयोग होने वाली पतली कागज की परतें होती हैं, जो चित्र की मोटाई बढ़ाने के लिए चिपकाई जाती हैं।

22. **"Sahibdin" किस राजस्थान की उप-शैली से संबंधित चित्रकार थे?**

A) किशनगढ़

B) बूंदी

C) जयपुर

D) मेवाड़

उत्तर: D) मेवाड़

स्पष्टीकरण: साहिबदीन मेवाड़ शैली के प्रमुख चित्रकार थे, जिन्होंने धार्मिक और ऐतिहासिक विषयों पर चित्रण किया।

23. **"Phad" चित्रकला किस स्थान से संबंधित है?**
A) जयपुर
B) जोधपुर
C) भीलवाड़ा
D) उदयपुर
उत्तर: C) भीलवाड़ा
स्पष्टीकरण: "Phad" चित्रकला भीलवाड़ा क्षेत्र की एक पारंपरिक चित्रकला शैली है, जो धार्मिक कथाओं को दर्शाती है।

24. **राजस्थानी चित्रकला में "Geet Govind" का क्या महत्व है?**
A) एक धार्मिक ग्रंथ
B) एक प्रसिद्ध चित्रकार
C) एक चित्रकला शैली
D) एक चित्रकला विषय
उत्तर: D) एक चित्रकला विषय
स्पष्टीकरण: "Geet Govind" एक प्रसिद्ध काव्य रचना है, जिसे चित्रकला में कृष्ण और राधा के प्रेम को दर्शाने के लिए चित्रित किया जाता है।

25. **"Nihal Chand" किस चित्रकला शैली से संबंधित चित्रकार थे?**
A) किशनगढ़
B) बूंदी
C) जयपुर
D) मेवाड़
उत्तर: A) किशनगढ़
स्पष्टीकरण: निहाल चंद किशनगढ़ शैली के प्रमुख चित्रकार थे, जिन्होंने "Bani Thani" जैसे चित्र बनाए।

26. **राजस्थानी चित्रकला में "Kajali" का क्या अर्थ है?**
A) एक रंग
B) एक चित्रकला शैली
C) एक चित्रकला विषय
D) एक चित्रकला उपकरण
उत्तर: B) एक चित्रकला शैली
स्पष्टीकरण: "Kajali" एक चित्रकला शैली है, जिसमें मुख्य रूप से काले रंग का उपयोग होता है और यह विशेष रूप से राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में प्रचलित है।